९. स्वतंत्रता युद्ध का अंतिम चरण

इस पाठ में हम भारत छोड़ो आंदोलन, भूमिगत आंदोलन, आजाद हिंद सेना का कार्य आदि का अध्ययन करेंगे ।

१९३५ ई. का कानून : इस कानून के अनुसार भारत में अंग्रेज शासित प्रांतों और रियासतों को मिलाकर एक संघराज्य स्थापित करने का प्रावधान किया गया । तद्नुसार अंग्रेज शासित प्रदेशों का शासन भारतीय प्रतिनिधियों के हाथों में दिया जाने वाला था । यदि रियासतें संघराज्य में विलीन हो जाती हैं तो उनकी स्वायत्तता समाप्त होने वाली थी । अतः रियासतदारों का संघराज्य में सम्मिलित होने से इनकार करना स्वाभाविक था । परिणामस्वरूप इस कानून में उल्लिखित संघराज्य की योजना प्रत्यक्ष में नहीं आ सकी ।

तीर मं मंडा : १९३५ ई. के कानून से राष्ट्रीय कांग्रेस संतुष्ट नहीं थी । फिर भी इस कानून के अनुसार प्रांतीय विधान सभा के चुनावों में राष्ट्रीय कांग्रेस ने भाग लेने का निश्चय किया । १९३७ ई. में देश के ग्यारह प्रांतों में चुनाव हुए । उनमें आठ प्रांतों में राष्ट्रीय कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ और उनके मंत्रिमंडल सत्ता में आए । अन्य तीन प्रांतों में किसी भी एक दल को बहुमत प्राप्त नहीं था । अतः वहाँ मिली-जुली सरकार बनाई गई ।

राष्ट्रीय कांग्रेस के मंत्रिमंडलों ने राजनीतिक बंदियों की कारावास से रिहाई, उद्योगोन्मुखी शिक्षा का प्रारंभ, दलित समाज के सुधार हेतु उपाय योजना, शराबबंदी, किसानों के लिए ऋण निवारण कानून जैसे लोककल्याणकारी कार्य किए ।

फ्स रोजना : द्वितीय विश्वयुद्ध में इंग्लैंड ने जापान के विरोध में अमेरिका का पक्ष लिया था । जापानी सेनाएँ भारत की पूर्वी सीमा के निकट आ पहुँच गईं । यदि जापान भारत पर आक्रमण करता है तो उसका प्रतिकार करने के लिए भारतीयों का सहयोग प्राप्त करना इंग्लैंड को आवश्यक लगने लगा । फलतः इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने स्टैफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा । मार्च १९४२ ई. में उन्होंने भारत के विषय में एक योजना भारतीयों के सामने रखी परंतु इस योजना से किसी भी राजनीतिक दल की संतुष्टि नहीं हुई । इस योजना में पूर्ण स्वाधीनता की माँग का स्पष्ट उल्लेख नहीं था । अतः राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस योजना को निरस्त कर दिया । क्रिप्स की इस योजना में पाकिस्तान की निर्मिति का समावेश नहीं था । परिणामतः मुस्लिम लीग ने भी इस योजना को ठुकरा दिया ।

द्वितीय विश्वयुद्ध और राष्ट्रीय कांग्रेस : १९३९ ई. में यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ । तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिंलिथगो ने घोषणा की कि भारत इंग्लैंड की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुआ है । इंग्लैंड ने यह भी दावा किया कि इंग्लैंड यूरोप में लोकतंत्र की रक्षा करने हेतु युद्ध कर रहा है । तब राष्ट्रीय कांग्रेस ने यह माँग की कि यदि इंग्लैंड का यह दावा सत्य है तो इंग्लैंड भारत को तुरंत स्वतंत्रता प्रदान करे । इंग्लैंड ने इस माँग को पूर्ण करने से इनकार कर दिया । परिणामस्वरूप नवंबर १९३९ ई. में राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रांतीय मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिया ।

भारत छोड़ो आंदोन : क्रिप्स योजना के पश्चात राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु प्रखर आंदोलन चलाने का संकल्प किया । १४ जुलाई १९४२ ई. को वर्धा में राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी ने भारत में ब्रिटिश सत्ता को शीघ्र समाप्त कर भारत को स्वाधीनता देने की माँग करने वाला प्रस्ताव पारित किया । साथ ही; यह चेतावनी भी दी गई कि यदि यह माँग नहीं मान ली गई तो राष्ट्रीय कांग्रेस भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अहिंसक आंदोलन प्रारंभ करेगी ।

भारत छोड़ो : ७ ऑगस्ट १९४२ ई. को मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान पर (क्रांति मैदान)

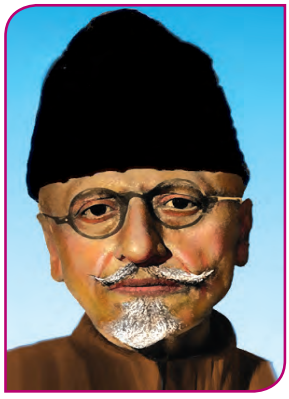
मौलाना आजाद

राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन प्रारंभ हुआ । इस अधिवेशन के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद थे । राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी ने वर्धा में अंग्रेज भारत छोड़कर चले जाएँ; यह प्रस्ताव पारित किया था; उसपर मुंबई के अधिवेशन में अंतिम मुहर लगने वाली थी । ८ अगस्त को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव रखा और यह प्रस्ताव प्रचंड बहुमत से पारित हुआ । गांधीजी के नेतृत्व में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन प्रारंभ करने का भी निर्णय लिया गया । गांधीजी ने कहा, ''इसी क्षण से प्रत्येक स्त्री-पुरुष यह मान ले कि वह स्वतंत्र हुआ है और स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में व्यवहार करे । हम भारत को स्वतंत्र करेंगे अथवा ऐसे भगीरथ प्रयास करते हुए मर तो भी जाएँगे ।'' गांधीजी ने जनता से 'करेंगे या मरेंगे' इस भावना से बलिदान देने के लिए तैयार रहने हेतु स्फूर्तिदायी आवाहन किया ।

र न आंिलन रंभ : राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को बंदी बनाए जाने का समाचार पूरे देश में फैल गया । क्रुद्ध जनता ने स्थान-स्थान पर जुलूस निकाले । पुलिस ने लोगों पर लाठियाँ चलाईं । गोलीबारी की । फिर भी लोग भयभीत नहीं हुए । ब्रिटिश सरकार की दमननीति का प्रतीक बने कारावासों, पुलिस थानों, रेल स्थानकों आदि स्थानों पर आंदोलकों ने हमले किए । सरकारी कार्यालयों को अपने अधिकार में कर लेने के प्रयास हुए । महाराष्ट्र में चिमूर, आष्टी, यावली, महाड़, गारगोटी आदि अनेक गाँवों में बच्चों से लेकर बूढ़ों ने जीवटता और अपूर्व धैर्य के साथ किया हुआ संघर्ष अविस्मरणीय रहा ।

चलो.. ।

व्यख ि सत्या : ब्रिटिश सरकार माँगों को लगातार दुर्लक्षित और उपेक्षित कर रही थी । अतः राष्ट्रीय कांग्रेस ने युद्ध विरोधी प्रचार करने का निश्चय किया । इसके लिए यह निर्णय लिया गया कि सामूहिक आंदोलन न करते हुए प्रत्येक व्यक्ति कानून तोड़ेगा । इसी को व्यक्तिगत सत्याग्रह कहते हैं । आचार्य विनोबा भावे व्यक्तिगत सत्याग्रह के पहले सत्याग्रही थे । इसके बाद लगभग पच्चीस हजार सत्याग्रहियों ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में सहभागी होकर कारावास सहा ।

आचार्य विनोबा भावे

क्या तुम जानते हो ?

रणाियी कहातन्याँ की....

स्वतंत्रता युद्ध में विद्यालयीन छात्रों ने भी अपना योगदान दिया है । नंदूरबार के एक विद्यालय के छात्रों ने शिरीष कुमार के नेतृत्व में तिरंगा झंडा लेकर जुलूस निकाला । 'वंदे मातरम्' के नारे लगाए । पुलिस ने क्रोध में आकर छोटे बच्चों पर भी गोलियाँ चलाईं । इस गोलीबारी में विद्यालय में पढ़ने वाले शिरीष कुमार, लालदास, धनसुखलाल, शशिधर और घनश्याम आदि छात्र बलिदान को प्राप्त हुए ।

शिरीष कुमार

जयप्रकाश नारायण

भूतमाि आंिलन : १९४२ ई. के अंत में जन आंदोलन में नया मोड़ आया । आंदोलन की बागडोर युवा समाजवादी कार्यकर्ताओं के हाथों में आ गई । जयप्रकाश नारायण, डॉ.राममनोहर लोहिया, छोटूभाई पुराणिक, अच्युतराव पटवर्धन, अरुणा असफ अली, यूसुफ मेहरअली, सुचेता कृपलानी, एस. एम. जोशी, शिरूभाऊ लिमये, ना.ग.गोरे, यशवंतराव चव्हाण, वसंतदादा पाटील, मगनलाल बागडी, उषा मेहता जैसे अनगिनत नेता अग्रसर थे ।

अरुणा असफ अली

अच्युतराव पटवर्धन

रेल पटरियों की तोड़–फोड़ करना, टेलीफोन के तार काटना, पुल उड़ाना जैसी गतिविधियों द्‌वारा आंदोलनकारियों ने संचार और सरकारी व्यवस्था को अस्त–व्यस्त कर दिया । संपूर्ण भारत में आंदोलन फैल गया । सिंध प्रांत में हेमू कलानी को समाचार मिला कि सशस्त्र ब्रिटिश सेना को ले जाने वाली रेल आ रही है; उसने अपने साथियों के साथ रेल की पटरियाँ ध्वस्त करने का प्रयास किया । न्यायालय ने उन सब को फाँसी की सजा सुनाई ।

वर्तमान रायगढ़ जिले की कर्जत तहसील के भाई कोतवाल का 'आजाद दस्ता', नागपुर के जनरल आवारी की 'लाल सेना' जैसे दलों ने कई महीनों तक सरकार की नाक में दम कर रखा था । मुंबई में विठ्ठल जवेरी, उषा मेहता और उनके साथियों ने एक गुप्त प्रसारण केंद्र स्थापित किया । उसे 'आजाद रेडियो' कहते थे । इस रेडियो द्‌वारा राष्ट्रभक्ति के गीत गाये जाते थे । देश में चल रहे आंदोलन से संबंधित समाचार तथा देशभक्तिपर भाषण प्रसारित किए जाते थे । इससे आंदोलन को आगे बढ़ाने में जनता को प्रोत्साहन मिलता था । ऐसे प्रसारण केंद्र कोलकाता, दिल्ली और पुणे में कुछ समय तक चले ।

समानांतर सरकार : देश के कुछ हिस्सों में से अंग्रेज अधिकारियों को खदेड़कर वहाँ लोगों की सरकारें स्थापित की गईं । इसी को समानांतर सरकार कहते हैं । बंगाल में मिदनापुर, उत्तर प्रदेश में बलिया और आजमगढ़, बिहार में भागलपुर और पूर्णिया जिलों में समानांतर सरकारों का गठन किया गया ।

महाराष्ट्र के सातारा जिले में क्रांतिसिंह नाना पाटील ने १९४२ ई. में अंग्रेज सरकार को निरस्त कर समानांतर सरकार की स्थापना की । कुंडल नामक क्षेत्र में क्रांतिअग्रणी जी.डी.उर्फ बापू लाड के नेतृत्व में तूफान सेना की समानांतर सरकार का गठन हुआ । इस सरकार द्‌वारा राजस्व इकट्ठा करना, कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना, अपराधियों को दंड देना जैसे कार्य किए जाते थे । इस सरकार द्‌वारा नियुक्त किए गए लोकन्यायालय लोगों के विवादों का निपटारा करते थे और लोग उनके न्याय को स्वीकार भी करते थे । इस सरकार ने साहूकारी प्रथा को विरोध करना, शराबबंदी, साक्षरता का प्रसार, जातिभेद उन्मूलन जैसे रचनात्मक कार्य किए । परिणामस्वरूप समानांतर सरकार जनता के लिए प्रेरणा स्थान सिद्‌ध हुई ।

क्रांतिसिंह नाना पाटील

भारत छोड़ो आंदोलन का उदय : १९४२ ई. के आंदोलन ने देशव्यापी आंदोलन का स्वरूप धारण कर लिया । स्वतंत्रता की प्राप्ति भारतीयों का लक्ष्य था और इस लक्ष्य को पाने के लिए असंख्य भारतीयों ने त्याग किया । अनगिनत लोगों ने अपने जीवन की आहुति दी । आंदोलनकारियों की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें बंदी बनाकर रखने के लिए जेलें भी कम पड़ गईं । साने गुरुजी, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज आदि के राष्ट्रभक्तिपर गीतों ने आंदोलनकारियों में चेतना का संचार किया । इस राष्ट्रव्यापी आंदोलन को 'अगस्त क्रांति' भी कहा जाता है ।

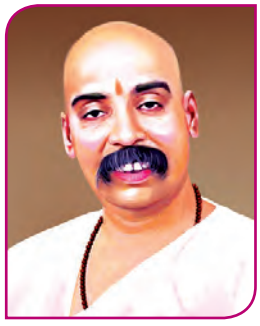

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज

आजाद हिंद सेना : भारत छोड़ो आंदोलन शिखर पर था । उस समय भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अभूतपूर्व प्रयास किए । भारत की पूर्वी सीमा पर हजारों भारतीय सैनिक अंग्रेजों के विरुद्‌ध युद्‌ध करने के लिए तैयार खड़े थे । ये सभी सैनिक आजाद हिंद सेना के थे । उनके नेता नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे ।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

सुभाषचंद्र बोस राष्ट्रीय सभा के एक महत्त्वपूर्ण नेता थे । उन्होंने दो बार राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष पद का भार उठाया था । इंग्लैंड द्वितीय विश्वयुद्ध में उलझा हुआ है और इसी का लाभ उठाते हुए भारत को अपना आंदोलन प्रखर बनाना चाहिए । इसके लिए अंग्रेजों के शत्रुओं से भी सहयोग प्राप्त करना चाहिए; यह सुभाष बाबू का विचार था परंतु इस विषय में राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ उनके मतभेद हुए । परिणामस्वरूप सुभाष बाबू ने अध्यक्ष पद का त्यागपत्र दे दिया । जनता के सामने अपने विचार रखने के लिए उन्होंने 'फॉरवर्ड ब्लॉक' दल की स्थापना की ।

सुभाषचंद्र बोस अपने भाषणों द्वारा अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करने का आवाहन भारतीयों से करने लगे । परिणामतः सरकार ने उन्हें बंदी बना लिया । सुभाष बाबू ने जेल में आमरण अनशन प्रारंभ किया । इसलिए सरकार ने उन्हें रिहा कर उनके घर में नजरबंद बनाकर रखा । वहाँ से वे भेस बदलकर निकल गए । १९४१ ई. के अप्रैल में वे जर्मनी पहुँचे । जर्मनी के रेडियो बर्लिन केंद्र से उन्होंने जनता से भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र युद्ध में हिस्सा लेने का आवाहन किया । इसी समय रासबिहारी बोस ने सुभाष बाबू को जापान आने का निमंत्रण दिया ।

आझाद हिंद सेना की स्थापना : रासबिहारी बोस जापान में १९१५ ई. से रह रहे थे । दक्षिण-पूर्व एशिया के देशप्रेमी भारतीयों को संगठित कर उन्होंने 'इंडियन इंडिपेंडंस लीग' नाम का संगठन स्थापित किया था । १९४२ ई. के पूर्वार्ध में जापान ने दक्षिण-पूर्व एशिया के उन प्रदेशों को जीत लिया जो प्रदेश अंग्रेजों के अधीन थे । वहाँ ब्रिटिश सेना में कार्यरत हजारों भारतीय सैनिक और अधिकारी जापान के हाथ लगे । युद्ध में बंदी बनाए गए भारतीय सैनिकों की एक पलटन कैप्टन मोहन सिंह के नेतृत्व में रासबिहारी बोस ने तैयार की । उसे 'आजाद हिंद सेना' नाम दिया गया । आगे चलकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद सेना का नेतृत्व किया ।

रासबिहारी बोस

१९४३ ई. के अक्तूबर महीने में नेताजी ने सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार की स्थापना की । शाहनवाज खाँ, जगन्नाथ भोसले, डॉ.लक्ष्मी स्वामीनाथन, गुरुबक्श सिंह ढिल्लों, प्रेमकुमार सहगल आदि उनके प्रमुख सहयोगी थे । कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन झाँसी की रानी महिला पलटन की प्रमुख थी । नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारतीय जनता से 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा ।' का आवाहन किया ।

आझाद हिंद सेना का : नवंबर १९४३ ई. में जापान ने अंदमान और निकोबार द्वीप जीतकर वे आजाद हिंद सरकार को सौंप दिए । नेताजी ने उन्हें क्रमशः 'शहीद' और 'स्वराज्य' नाम दिए । १९४४ ई. में आजाद हिंद सेना ने म्याँमार का अराकान प्रदेश अपने नियंत्रण में कर लिया । असम के पूर्वी सीमा की चौकियाँ जीत लीं । इसी अवधि में आजाद हिंद सेना को जापान से प्राप्त होने वाली सहायता बंद हो गई । परिणामतः इंफाल का अभियान अधूरा रह गया परंतु प्रतिकूल परिस्थिति में भी आजाद हिंद सेना के सैनिक पूरी जीवटता के साथ लड़ते रहे लेकिन इसी अवधि में जापान ने आत्मसमर्पण किया । १८ अगस्त १९४५ ई. को सुभाषचंद्र बोस का विमान दुर्घटना में निधन हुआ । ऐसी स्थिति में आजाद हिंद सेना को हथियार डालने पड़े । इस प्रकार आजाद हिंद सेना द्वारा किए गए युद्ध का रोमहर्षक युग समाप्त हुआ ।

आगे चलकर ब्रिटिश सरकार ने आजाद हिंद सेना के अधिकारियों पर राजद्रोह का अभियोग रखा । पं.जवाहरलाल नेहरू, भुलाभाई देसाई, तेज बहादुर

सप्रू जैसे निष्णात और बुद्धिमान विधि विद्वानों ने उनके बचाव का कार्य किया परंतु सैनिकी न्यायालय ने उन अधिकारियों को दोषी ठहराकर आजीवन कारावास का दंड सुनाया । फलतः भारतीय जनता में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध प्रखर असंतोष उत्पन्न हुआ । अंततः सैनिकी न्यायालय द्वारा दी गईं सजाएँ सरकार को निरस्त करनी पड़ीं ।

भारतीय नौसेना और वायसेना का ह : आजाद हिंद सेना से प्रेरणा पाकर नौसैनिकों और वायुसैनिकों में असंतोष निर्माण हुआ । उसका विस्फोट १८ फरवरी १९४६ ई. को मुंबई में ब्रिटिश युद्धपोत 'तलवार' पर हुआ । सैनिकों ने युद्धपोत पर तिरंगा ध्वज लहराया । अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध नारे लगाए । ब्रिटिश सरकार ने सेना भेजकर नौसैनिकों पर गोलियाँ चलवाईं । उसका जवाब भी विद्रोहियों ने गोलियों से ही दिया । मुंबई के श्रमिकों और आम लोगों ने नौसैनिकों को समर्थन दिया । अंततः सरदार वल्लभभाई पटेल ने मध्यस्थता की और नौसैनिकों ने शस्त्र नीचे रखे ।

मुंबई में हुए नौसैनिकों के विद्रोह को समर्थन देने के लिए दिल्ली, लाहौर, कराची, अंबाला, मेरठ आदि स्थानों पर वायुसेना के अधिकारियों ने भी हड़ताल की घोषणा की । यह विद्रोह ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध असंतोष की भावना का पराकाष्ठा तक पहुँचने का सूचक था । इस प्रकार १९४२ ई. से १९४६ ई. की अवधि में भारत में ब्रिटिश सत्ता की नींव चरमरा गई । 'भारत छोड़ो' आंदोलन द्वारा भारतीय जनता का ब्रिटिशों के प्रति प्रखर विरोध अभिव्यक्त हुआ । सेना, नौसेना और वायुसेना अंग्रेज सत्ता के आधार स्तंभ थे । वे भी अब ब्रिटिश विरोधी बनने लगे थे । इन सभी घटनाओं के फलस्वरूप भारत पर अपनी सत्ता दीर्घकाल तक बनाए नहीं रखी जा सकेगी; यह बोध अंग्रेज शासकों को हो गया ।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्प से उचित विकल्प चुनकर कथन पुनः लिखो ।

(अंदमान और निकोबार, अगस्त क्रांति, विनोबा भावे)

(१) व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रही ..... थे ।

(२) १९४२ ई. के राष्ट्रव्यापी आंदोलन को ..... भी कहा जाता है ।

(३) नवंबर १९४३ ई. में जापान ने ..... द्वीप जीतकर वे आजाद हिंद सेना को सौंप दिए ।

२. निम्न कथन कारणसहित स्पष्ट करो ।

(१) नवंबर १९३९ ई. में राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रांतीय मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दिए ।

(२) आजाद हिंद सेना को शस्त्र नीचे रखने पड़े ।

(३) समानांतर सरकार जनता के लिए प्रेरणा स्थान सिद्ध हुई ।

३. निम्न सारणी पूर्ण करो ।

संगठन	संस्थापक
फॉरवर्ड ब्लॉक	
इंडियन इंडिपेंडंस लीग	
तूफान सेना	

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

(१) शिरीष कुमार का कार्य तुम्हारे लिए किस प्रकार प्रेरणादायी है ?

(२) इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने स्टैफोर्ड क्रिप्स को भारत क्यों भेजा ?

(३) राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को बंदी बनाने का समाचार पूरे देश में फैलने पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उपक्रम

(१) आजाद हिंद सेना द्वारा किए गए युद्ध की घटनाओं की कालरेखा बनाओ ।

(२) १९४२ ई. के भारत छोड़ो आंदोलन के छायाचित्र (फोटो) अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो और राष्ट्रीय दिनों के अवसर पर उनकी प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

9BMDWI